पशुपालकों के लिए महत्वपूर्ण निर्देश

डॉ. अरबिन्द कुमार वर्मा[1], बजरंग लाल ओला[2], डॉ. बी. एस. राठौड[3]

डॉ. अरबिन्द कुमार वर्मा[1]
विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशुपालन)
कृषि विज्ञान केन्द्र, गूंता-बानसूर, अलवर, राजस्थान
संपर्कः फोनः 09694940431
ई मेलःdravermavet@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहां किसानों की आय के मुख्य साधन कृषि एवं पशुपालन है परन्तु आज के परिपेक्ष में लगातार कम होती हुई किसानों की जोत एवं बढती हुई पानी की समस्या किसानों को पशुपालन की ओर आकर्षित कर रही है। राजस्थान के अलवर जिले में भी ऐसी ही परिस्थितयां हैं यहां के मुख्य पशुधन गाय, भैंस, भेंड, एवं बकरी हैं जिन्हें किसान व्यवसाय के तौर पर पालते हैंए परन्तु जानकारी के अभाव में किसान पूरा फायदा नहीं ले पाते है। इसे ध्यान में रखते हुए उत्तम पशुपालन के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है एवं किस.किस समय कौन-कौन से कार्य करने चाहिए उन सभी पहलुओं पर इस लेख में महीना वार जानकारी दी जा रही है ।

जनवरी:

1. पशुओं का शीत/ठण्ड से समुचित बचाव करें।
2. तीन माह पूर्व गर्भाधान कराये गये पशुओं का गर्भ परीक्षण करायें। जो पशु गर्भित नहीं हैं उन पशुओं का सम्यक जाँचोपरांत समुचित उपचार करायें।
3. उत्पन्न संतति का विशेष ध्यान रखें।
4. दुहान से पहले एवं बाद में अयन को पोटेशियम परमैगनेट (लाल दवा) के घोल से अच्छी तरह साफ कर लें।
5. नवजात बछड़ों को खीस पिलायें एवं ठंड से बचायें।
6. पड्डों को अंतःपरजीवी नाशक दवा पिलायें।
7. पशुओं को ताजा या गुनगुना पानी पिलायें।
8. बकरे व भेड़ों को ज्यादा दाना न खिलाकर अन्य चारा दें।
9. दुधारू पशुओं को गुड़ खिलायें।
10. दुहान के बाद थन पर नारियल का तेल मलें।
11. पशुशाला को साफ व सूखा रखें।

फरवरी:

1. बाह्य परजीवी से बचाव हेतु दवा से नहलायें।
2. कृत्रिम गर्भाधान करवायें।
3. खुरपका, मुँहपका रोग से बचाव हेतु टीका लगवायें।
4. गर्भ परीक्षण करायें एवं अनुर्वर पशुओं का उपचार करायें।

मार्च

1. पशुशाला की सफाई व पुताई करायें।
2. बधियाकरण करायें।
3. खेत में चरी सूडान तथा लोबिया की बुआई करें।
4. गाय, भैंस व बकरी का क्रय करें।
5. मौसम में परिवर्तन से पशुओं का बचाव करें।

अप्रैल

1. जायद के हरे चारे की बुआई करें, बरसीम चारा बीज उत्पाद हेतु कटाई कार्य करें।
2. अधिक आय हेतु स्वच्छ दुग्ध उत्पादन करें।
3. तीन माह पूर्व गर्भाधान कराये गये पशुओं का गर्भ परीक्षण करायें। जो पशु गर्भित नहीं हैं उन पशुओं सम्यक जांचोपरांत समुचित उपचार करायें।

मई:

1. गर्मी से बचाव का उपाय करें।
2. गलाघोटूँ तथा लँगड़िया बुखार का टीका समस्त पशुओं में लगवायें।
3. पशुओं को हरा चारा पर्याप्त मात्रा में खिलायें।
4. पशुओं को स्वच्छ जल पिलायें तथा प्रातः एवं सायं नहलवायें।
5. पशुओं को लू एवं गर्मी से बचाने की व्यवस्था करें।
6. पशुओं को नमक तथा खनिज मिश्रण का सेवन करायें।
7. गर्भ परीक्षण तथा अनुर्वर पशुओं की चिकित्सा करायें।

जून:

1. पशुओं को लू से बचायें।
2. हरा चारा पर्याप्त मात्रा में दें।
3. अन्तः परजीवी से बचाव हेतु औषधि पान करायें।
4. खरीफ के चारे मक्का, लोविया के खेत की तैयारी करें। सूखे खेत की चरी न खिलायें अन्यथा जहर फैलने की सम्भावना भी हो सकती है।
5. तीन माह पूर्व गर्भाधान कराये गये पशुओं का गर्भ परीक्षण करायें। जो पशु गर्भित नहीं हैं उन पशुओं सम्यक जाँचोंपरांत समुचित उपचार करायें।

6. पशुओं के ब्याने से पहले उन्हें संन्तुलित आहार एंव कैल्सियम तथा फास्फोरस फीड सप्लीमेंट्स नियमित रूप से दें।

जुलाई:

1. खरीफ हेतु हरे चारे की बुवाई करें।
2. पशुओं के पेट के कीडे मारने की दवा पिलाऐं यदि मई या जून में नही पिलाई है तो ।
3. पशुओं को बरसात से बचाने का प्रबंध करे ।

अगस्त:

1. जिन पशुओं में गलघोटू का टीका नही लगा है, लगवा दें।
2. लीवर फल्यूक की दवा पशुओं को पिलाऐं।
3. ग्याभिन पशुओं की देखभाल तथा खिलाई उचित रूप से करें।
4. दुग्ध उत्पादन शुरू होने पर पशुओं को फीड सप्लीमेंटस जैसे कैल्सियम एंव फास्फोरस खिलाऐं।
5. समय-समय पर पशुचिकित्सक से पशु की जाँच करवाऐं
6. पशुओं को बाहाय परजीवियों से बचाने के लिए पशुशाला को फिनायल से साफ करे ।

सितम्बरः-

1. दुधारू पशुओं में थनैला रोग से बचाव के उपाय करें ।
2. गाय व भैंस को ताव में आने के 12-18 घन्टे के अन्दर ग्याभिन करवाने का उचित समय है ।
3. पशुओ को अन्तः परजीवी नाशक दवाई पशु चिकित्सक की सलाह से समय-समय पर पिलायें ।

अक्टूम्बरः-

1. इस माह से सर्दी का मौसम शुरू हो जाता है अतः पशुओं का सर्दी से बचाव का उचित प्रबन्ध करे।
2. सर्दी के मौसम में अधिकतर भैंस ताव में आती है, अत भैस के ताव में आने पर समय से ग्याभिन करवायें।
3. भैस को मुर्राह नस्ल के झोटे से या नजदीकी कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र से ही ग्याभिन करवायें।
4. भैंस ब्याने के 60-70 दिनो तक ताव में नही आये तो नजदीक के पशु चिकित्सक से जॉच करवायें।
5. भैस व गाय को समय से ताव में लाने के लिए खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें।
6. पशुओ को बाहय परजीवी से बचाव के लियें पशु-चिकित्सक की सलाह से दवाई का छिडकाव नियमित करे ।
7. अधिक चारा लेने के लिए बरसीम फसल की उन्नत किस्में बीएल-10, बीएल-22 व बीएल -42 की बिजाई इस माह अवश्य कर लें।
8. नई फसल से अधिक चारा लेने के लियें उन्नत किस्में जेएचओ-822 , क्यूएस-6 ओएल-9 या केन्ट की बींजाई माह के मध्य में शुरू करे।

नवम्बरः-

1. पशुओ को खुरपका मुंहपका बीमारी के बचाव का टीका लगवायें।
2. थनैला रोग से बचाव के उपाय करे ।
3. सर्दी के मौसम में भैस अधिकतर ताव में आती है अतः भैस को समय से मुर्राह नस्ल के झोटे से ग्याभिन करवायें।
4. पशुओ को सर्दी से बचाने के लिए पशु घर का उचित प्रबन्ध करे ।
5. पशुओं का बिछावन सूखा होना चाहिए तथा प्रतिदिन बदल देना चाहिए।
6. पशुओं को खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें
7. जई फसल की बिजाई इस माह पूरी कर ले।
8. बरसीम फसल की सिंचाई। 15-20 दिन के अन्तराल पर करते रहे ।
9. रिजका की बिजाई इस माह के मध्य तक अवश्य पूरी कर लें।

दिसम्बरः-

1. पशुओ को अन्त कृमिनाशक दवाई पशु चिकित्सक की सलाह से समय-समय पर पिलायें ।
2. पशुओ को संतुलित आहार के साथ-साथ खनिज मिश्रण प्रतिदिन खिलाऐं।
3. बरसीम अधिक खिलाने से पशुओ को आफरा हो सकता है आफरे से बचाव के लिए बरसीम के साथ सूखा चारा मिला कर खिलायें।
4. पशुओ को सर्दी से बचाव का उचित प्रबन्ध करे ।
5. पशुओ को खुरफका मुंहपका रोग बचाव का टीका लगवायें।

6. दुधारू पशुओ को थनैला रोग से बचाने के लिए पूरा दूध दोहम के बाद थनो को कीटाणुनाशक घोल में डूबोयें।
7. बरसीम फसल को सर्दियों में 15-20 दिनो के अन्तर में पहला पानी 21-35 दिनो पर लगायें।
8. पशु को बच्चा देने के बाद जेर डालने का इन्तजार न करे और बच्चे को खीस 2 घण्टें के अन्दर ही पिलायें।
9. बच्चा देने के 1 घण्टे बाद पशु के शरीर को लाल दवाई के हलके गुनगुने पानी से पोंछ दें उसके बाद बच्चे को पहला दूध पिलायें जो जेर को बाहर निकालने में मदद करता है।
10. गाय व भैस का बच्चा पैदा होते ही बच्चे की नाल को 1.5 से 2.0 इंच पर धागे से बांध कर नये ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडीन लगायें।
11. अधिक दूध देने वाले पशुओ के ब्यांने के 7-8 दिन तक दुग्ध ज्वर (मिल्क फीवर) होने की संम्भावना अधिक होती है इसलियें पशु को कैल्सियम, फास्फोरस का घोल 70-100 ग्राम प्रतिदिन पिलाए तथा 8-10 दिन तक पूरा दुध न निकाले।
12. पशुओ के पेट के कीडो की रोकथाम करने के लिए बच्चा पैदा होने के 7 दिन, 25 दिन, 3 माह और 6 माह के अन्तंराल पर कीडे नाशक दवाई की खुराक पशु-चिकित्सक की सलाह के अनुसार दें और इसके बाद प्रत्येक 4 माह के अन्तराल पर अवश्य देते रहे।

पशुओं में टीकाकरण एवं सावधानियाँ

टीकाकरण मनुष्य की तरह पशुओ में भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। टीकाकरण विभिन्न संक्रामक रोगो से बचाने का एक प्रभावी एवं सस्ता उपाय है इसके लिए उचित टीका, उचित मात्रा, उचित समय का ध्यान रखना अति आवश्यक होता है। पशु चिकित्सा विभाग द्वारा प्रति वर्ष गाँवों में वर्षा ऋतू से पहले एवं वर्षा ऋतू के बाद में शिविर लगाया जाता है, जिसमे गाँव के सभी पशुओ को टीकाकरण निःशुल्क किया जाता है। अगर आपके गाँव में शिविर नही लगा हो तो निकटतम पशु चिकित्सालय में सम्पर्क करके अपने पशुओ को टीकाकरण अवश्य करवाऐं।

क्र.स.	रोग का नाम	टीका लगाने का समय	टीका लगाने की जगह	आयु प्रथम टीका माह	अन्तराल	समय
1.	खुरपका - मुंहपका	एफ.एफ.एम. डी बैक्सीन	त्वचा के नीचे/मांसपेशी	4-6 माह	6 माह	सितंबर
2.	लंगडी-बुखार	बी.क्यू.बैक्सीन	त्वचा के नीचे/मांसपेशी	06 माह	01 वर्ष	मई-जून
3.	गलघोटू	एच.एस.बैक्सीन	त्वचा के नीचे/मांसपेशी	06 माह	01 वर्ष	मई-जून
4.	ब्रुसेलोसिस	ब्रूवेक्स	त्वचा के नीचे/मांसपेशी	4-8 माह केवल बछियों में	जीवन में एक बार	मई-जून
5.	एंथ्रेक्स	स्पोर बैक्सीन	मांसपेशियों में गर्दन पर	6 माह	1 वर्ष	मई-जून

सावधानियाँ:-

1. पशुओं को टीका लगवाने से 1-2 दिन पहले कीडे मारने की दवा देनी चाहिऐ।
2. टीकाकरण की डायरी बनाकर समय अनुसार पशु चिकित्सक से टीके लगवाने चाहिऐ ।
3. गर्भकाल में व बीमार पशुओं का टीकाकरण नही करवाना चाहिऐ ।
4. पुराने व अवधि समाप्त हुए टीका का उपयोग नही करना चाहिऐ।
5. मौसम के अनुसार टीके लगवाने चाहिए अन्यथा टीके निष्क्रिय हो जाते है।
6. टीके उम्र के अनुसार ही लगवाने चाहिऐ।
7. टीकाकरण के बाद यदि पशुओं को बेचैनी, घबराहट इत्यादि होने पर तत्काल पशुचिकित्सक से परामर्श कर उचित उपचार करवाना चाहिए।

लेखक विवरण

1. डॉ. अरबिन्द वर्मा, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु पालन), कृषि विज्ञान केन्द्र, गूंता, बानसूर, अलवर (राजस्थान), संपर्कः **फोनः** M: 09694940431, **ई मेलः** dravermavet@gmail.com
2. बजरंग लाल ओला, विषय वस्तु विशेषज्ञ, (पादप संरक्षण), कृषि विज्ञान केन्द्र, गूंता, बानसूर, अलवर (राजस्थान), संपर्कः **फोनः** M: 09602757361 and 09887291983, **ई मेलः** bajrangola@gmail.com
3. डॉ. बी. एस. राठौड़, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, गूंता, बानसूर, अलवर (राजस्थान), संपर्कः **फोनः** M: 09979798424, **ई मेलः** bhagwat80@gmail.com

==========